अमृतलाल नागर कृत 'बूँद और समुद्र' में सामाजिक यथार्थ

प्रा. गावंडे तुकाराम पाराजी
शिवछत्रपती कला महाविद्यालय, पाचोड, ता. पैठण, जि. औरंगाबाद

अमृतलाल नागर का 'बूँद और समुद्र' जीवन और उसके सभी पक्षों का महाकाव्यात्मक उपन्यास है । नागर ने मानव जीवन को विभिन्न परिपार्श्व और दृष्टिकोणों से देख और उन सभी रूप-चित्रों को एक विशाल तट पर प्रस्तुत किया है । नागर जी ने यहाँ युग की सामाजिकता को यथार्थ रूप में अंकित किया है। अपने परिवेश की व्यापकता, विस्तार एवं जनसंकुलता से 'बूँद और समुद्र' प्रेमचंद की परंपरा से जुड़ता है । किंतु साथ ही उसमें व्यक्ति के मन की एकांत निजी भावनाओं , कुंठाओं, उलझनों और आत्म-संघर्षों को समझाने का भी बड़ा सच्चा प्रयत्न दिखाई पड़ता है । परंपरागत जीवनपद्धति, रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार, विचार विवेक, पुरानी चाल के लोग और उनकी जीवन दृष्टियों के समानान्तर सम-सामायिक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक शक्तियों और नयी परिस्थितियों से प्रेरित आधुनिक जीवनदृष्टियों, व्यक्ति का अंत:संघर्ष और उसकी निजी समस्याओं, नये ढंग का रहन-सहन और जीवन की उलझने-इन सभी को नागर जी ने 'बूँद और समुद्र' के पात्रों और घटनाओं के विस्तृत जाल में एक साथ गूँथ-बून दिया है।

'बूँद और समुद्र' शीर्षक प्रतीकात्मक एवं लाक्षणिक है । 'बूँद' व्यक्ति का प्रतीक है और समुद्र' समाज को प्रतीकित करता है । समाज केवल समूह का पर्याय नहीं है। उसकी अपनी परंपरा एवं मान्यता होती है । व्यक्ति का समाज से सम्बन्ध का मतलब है उन सभी मान्यताओं से जुड़ा रहना । आजादी के बाद व्यक्ति और समाज के सम्बन्धों का टूटना आरम्भ हो गया था। नागरजी स्पष्ट रूप से स्वीकार करते हैं कि समाज के साथ रहने में ही व्यक्ति जीवन की सार्थकता है।

सज्जन द्वारा नागरजी ने एक ऐसे विकासोंन्मुख पात्र को बताया है जिसके द्वारा वह समष्टि-साधना के मार्ग में आनेवाले अन्तर्बाह्य संघर्षों का मनोवैज्ञानिक चित्रण कर सके है। आज के शिक्षित नवयुवकों को मानसिक परेशानियाँ है वे सज्जन में भी है । पैतृक परम्परा के अनुसार वह नारी को मनोरंजन एवं दैहिक स्फूर्ति देने का साधन मानता है । मध्यवर्ग की नारी की आज समाज में क्या स्थिति है । यह नागरजी ने इस उपन्यास में अनेक उदाहरणों द्वारा अवगत कराया है ।

नारी के अभिशप्त जीवन का मूल कारण पुरूष वर्ग का स्वार्थ भी है । वस्तुत: आज की सामाजिक व्यवस्था ही इतनी दोषपूर्ण है कि सामाजिक, धार्मिक और नैतिक रूढ़ियों में कतिपय निहित स्वार्थवाले व्यक्तियों तथा वर्गों द्वारा वह इस प्रकार जकड़ दी गई है कि नाना प्रकार की विकृतियाँ उभर-उभरकर न केवल व्यक्ति के जीवन को नरक बना रही है वरन एक सही सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में भी बाधक है। इसीलिए वनकन्या का निष्कर्ष है - 'नारी होना आज की सामाजिक स्थिति में अभिशाप है । स्त्री आम तौर पर आर्थिक दृष्टि से पुरूष की आश्रिता है, उसका व्यक्तित्त्व स्वतंत्र नहीं है इस देश की स्त्रियाँ सदा से यह दु:ख उठाती आयी है । भारतीय समाज में यदि नारी आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र हो जाए तो अनेक समस्याएँ अपने आप सुलझ जाएंगी । कन्या के शब्दों में इसे लेखक ने अभिव्यक्ति दी है, जहाँ आप और

आपके पति साथ-साथ कमाने लगेंगे तब इस तरह का स्वामी- दासीपन का नाता तो रह ही नहीं जाएगा, दोनों बराबरी से बातचीत करेंगे ।

प्रेम अथवा विवाह के प्रश्न को लें । सामंती पूँजीवादी, समाज व्यवस्था में प्रेम और विवाह भी भोग विलास में बदल गए हैं । व्यक्तिगत स्वार्थ यहाँ भी सामाजिक स्वार्थ पर हावी है। प्रेम के मायाजाल में फँसकर नारी पुरूष के अनाचारों का शिकार होती है और वह अन्ततः नारकीय जीवन व्यतीत करती है । वनकन्या के पिता के प्रसंग के माध्यम से नागरजी ने संयुक्त परिवार में बाल-विधवा की दारूण दशा की ओर संकेत किया है ।

महिपाल के चरित्र द्वारा नागर जी ने भारतीय लेखक की विषमताओं एवं उसके आर्थिक संकट का चित्रण किया है । महिपाल की ट्रेजेडी उसके वैयक्तिक-सामाजिक पक्षों की असमन्विति का परिणाम है । इसका जीवन भी अभावों से परिपूर्ण है। नौ प्राणियों के पालन-पोषण का उत्तरदायित्त्व उसे जीवन में उद्विग्न बना देता है । मध्यमवर्गीय पारिवारिक समस्याओं जिनमें पति-पत्नी के सम्बन्ध का विशेष महत्त्व है, पर भी प्रकाश डाला गया है । कल्याणी के धर्मनिष्ठ सात्त्विक पत्नी होने का महिपाल को पूर्ण बोध है परंतु वह इस सम्बन्ध से अप्रसन्न है । इसके लिए माता-पिता को दोषी ठहराता है । नागर जी ऐसे विवाह के विरोधी है जो केवल समाज को दिखाने के लिए पति-पत्नी का रिश्ता निभा रहे हैं । समाज में स्त्री और पुरूषों को अपनी इच्छा के अनुसार पति-पत्नी चुनने का अधिकार हो तो अनेक पारिवारिक समस्याओं की जड़ नष्ट होगी । परंतु ऐसा नहीं होता है। यह स्त्री-पुरूषों पर सरासर अन्याय है, इससे घर में अशान्ति तो फैलती ही है यहाँ तक की पूरा घर बरबाद हो जाता है और अच्छा व्यक्ति दिमागी तौर पर कुण्ठाहीन, दासताहीन, जीवन व्यतीत कर आत्महत्या करने को मजबूर होता है । महिपाल के चरित्र द्वारा लेखक ने इस सच्चाई को पाठकों के सामने रखा है।

महिपाल का समाज के प्रति आक्रोश है, उसे वर्तमान सामाजिक व्यवस्था से शिकायत है कि उसके जैसे जागरूक साहित्यकार को अभावग्रस्त बनकर भूखे मरना पड़ रहा है । यही है आज के व्यवस्था की नीतिमत्ता । ईमानदार, साहित्यकारों के साथ समाज के व्यवहार पर गहरा व्यंग्य किया है । इसी तरह नागरजी ने वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर विरोध स्पष्ट किया है । उपन्यास में चित्रित राजनीतिक जीवन का चित्र जितना उस युग में सही था उतना ही आज भी है । यह चित्र अत्यंत निराशाजनक एवं जुगुप्सापूर्ण है । लेखक का मन्तव्य सही है कि राजनीति केवल दाँवपेचों का अखाडा है, मानवहित के आदर्श से हीन, व्यक्तिगत, अहंकार के कारण राजनैतिक खिलाड़ियों की बुद्धि चतुराई और कार्यकुशलता बहक गई है । आज देश में जितनी भी राजनीतिक पार्टियाँ है सब अधिकांश में एक दूसरे से बढ़कर बेईमान, शुद्र आकांक्षाओं वाले जालसाज, दंभी और मगरूरों द्वारा अनुशासित है, आदर्श और सिद्धांत तो महज शिकार खेलने के आड़ की टट्टियाँ है । इनका आपसी संघर्ष अधिकतर व्यक्तिगत है ।

नागरजी ने धर्म की आड़ में हो रहे शोषण को भी सामने रखा है । धर्म के नाम पर निरीह और भोले-भाले लोगों का जो शोषण हो रहा है, वह उस शोषण से जो खुले आम होता है, निश्चित ही ज्यादा घृणित और निन्दनीय है । अपने पात्रों के मुख से यह कहलाकर नागरजी ने धर्म के नाम पर होनेवाले ढकोसलों को पाठकों के सामने रखा है । धर्म और

परलोक के नाम पर तीर्थस्थलों की पवित्रता नष्ट हो गई है । तीर्थस्थल, मंदिर केवल धर्म के ठेकेदारों के अड्डे मात्र बन गए हैं । सज्जन-वनकन्या, को वृन्दावन-मथुरा यात्रा के समय मंदिरों और वहाँ के रंगी कार्यकर्ताओं, खाऊपेट स्वार्थी और ईर्ष्यालु व्यक्तियों के व्यंग्य विद्रुप भरे चित्र नागर जी ने प्रस्तुत किए हैं । सज्जन और वनकन्या द्वारा महिला सेवा मण्डल की भण्डाफोड करके सेवा के नाम पर होनेवाले घिनौने कार्यों पर प्रकाश डाला है। कैसी विडंबना है कि स्त्री सेवा का ढोंग करके गरीब लड़कियों को किस तरह फँसाया जाता है, तथा उनसे अनैतिक कार्य करवाये जाते हैं ।

इस उपन्यास में बड़ी बहु के द्वारा बताया गया है कि सिनेमा का मोह बड़ी बहु के जीवन में कैसा जहर घोल देता है । नागरजी ने यह स्पष्ट किया है कि सिनेमा का प्रभाव किस तरह नगर की संस्कृति को नष्ट कर रहा है तथा आचार-विचार के मापदण्ड अलग बन गए हैं।

महिपाल एवं कल्याणी द्वारा नागरजी ने मध्यवर्गीय लोगों की समस्याओं का चित्रण किया है । मध्यवर्ग के पास साधन सीमित होते है और अधिक से अधिक वह अच्छे ढंग से जीना चाहता है । उच्च वर्ग का मुकाबला करने का प्रयास करता है जैसा कि महिपाल के कुटुंब की अवस्था है । महिपाल की पत्नी कल्याणी भांजी की शादी अपने ही जैसे कान्यकुब्ज के उच्च गोत्र में करना चाहती है । उसकी इस जिद से महिपाल को अतिकष्ट याने पैसों की व्यवस्था करने हेतु चोरी तक करनी पड़ती है । इस मध्यवर्गीय मजबुरी ने या तो कलाकार को समाप्त कर दिया नहीं तो उसकी कला अवश्य समाप्त हो गयी । जैसा कि इसी अन्तर्द्वंद्व में महिपाल आत्महत्या करने को मजबूर होता है । महिपाल के माध्यम से लेखक ने कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के रीति-रिवाजों का पर्दाफाश किया है ।

कल्याणी के माध्यम से लेखक ने नारी की अपनी जाति के प्रति कट्टर भावना को प्रस्तुत किया है । इस तरह पथभ्रष्ट होकर धर्म को माननेवाली स्त्रियाँ अपने परिवार को भी बरबाद करती है । आज भी भारत में साठ प्रतिशत घरों में स्त्रियाँ इसी तरह बुद्धिहीन अन्धनिष्ठा का जीवन बिता रही है ।

ताई के चरित्र द्वारा नागरजी ने बताया है कि किस तरह परिस्थितियाँ व्यक्ति को घृणामयी बना देती है और वही उसे करूणामयी । तरह-तरह के टोने-टोटके, बिनगाली बात न करने, कितनों से शत्रुता करने और छुआछूत का चरम व्यवहार करनेवाली रूढ़िग्रस्त घृणामयी ताई । उतनी ही वात्सल्यमयी, करूणामयी, तथा दानदात्री सुहृदया भी है । सामान्य समाज के सताने से तंग होकर ताई घृणा और हिंसा की प्रतिमूर्ति बन जाती है । जिस प्रेम को मानव ने दबाया-सुलाया उसे ही मानवेत्तर जीवों ने जगाया-बढ़ाया ।

यह उपन्यास हमारे समाज में व्याप्त दु:ख, दयनीयता, घूटन, बेबसी, अत्याचार-अनाचार, पाशविकता, बीभत्सता आदि को अनावृत्त कर हमारे सामने रख देता है । अतृप्त प्रेम एवं वासना में घुटनेवाली अत्याचारिता वधुएँ, मनुष्य की स्वार्थ संकीर्णता एवं भोगलिप्सा का शिकार बनी तिरस्कृत नारियाँ, रूज, पाऊडर, क्रीम, बिन्दी, फैशन, सिनेमा आदि में भटकनेवाली आधुनिकाएँ, अन्ध संस्कारों में जकड़ी टोना-टोटका, भूत-प्रेत, जन्तर-मन्तर आदि में रमनेवाली स्त्रियाँ जाने कितने प्रकार के पात्र इस उपन्यास में अंकित है । अन्ततः कह सकते है कि समाज के सभी वर्ग के पात्र चुनकर नागरजी ने जीवन का यथार्थ पाठकों के सामने खुला रखा है ।

संदर्भ ग्रंथ :

१. हिंदी उपन्यास - सम्पा. सुषमा प्रियदर्शिनी

२. हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियाँ - डॉ. शशिभूषण सिंहल

३. हिंदी उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन - डॉ. गिरीधर शर्मा प्रसाद

४. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों के नारी पात्रों में युगचेतना - डॉ.वी. विजयलक्ष्मी

५. हिंदी के महाकाव्यात्मक उपन्यास - डॉ. वसंत शंकर मुदगल

६. साठोत्तर हिंदी उपन्यास - कुसुम शर्मा

७. बूँद और समुद्र समीक्षा - डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त

८. बँदू और समुद्र - अमृतलाल नागर

International Research Journal of Humanities and Interdisciplinary Studies
IRJHIS